

## नवजात शिशुओं के कम शारीरिक वजन हेतु उत्तरदायी जैव-सांख्यिक कारकों का अध्ययन

डॉ० मीनू कुमारी

एम.ए., पीएच.डी. (गृह विज्ञान)

बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर (बिहार)

### परिचय

वालिया एवं अन्य (2006) ने बताया कि प्रायः कम शारीरिक वजन वाले नवजात शिशुओं का मर जाना एक आम बात है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन 2005 के विशेषज्ञ समिति ने यह साबित किया है कि वैसे बच्चे जिनके जन्म के समय वजन 2500 ग्राम से कम होता है, नवजात शिशु कहलाता है। अर्थात् ‘‘जीवन के पहले धंटे में 2.5 किलोग्राम से कम वजन वाले शिशुओं को कम वजन वाले नवजात शिशु कहा जाता है।’’

भारतीय विशेषज्ञों का मानना है कि यह मापक विकसीत देशों के लिए सही है और भारत चूँकि एक विकासशील देश है तो यह मापक यहाँ के हिसाब से सही नहीं है इनके अनुसार 2000 ग्राम सही पैमाना है। 2000 ग्राम से कम वजन वाले शिशु कम शारीरिक वजन वाले नवजात शिशु के अंतर्गत आने चालिए।

सभी विशेषज्ञों के द्वारा किये गये अध्ययन पर गौर करने पर हमें यही निष्कर्ष प्राप्त होता है कि :-

1. नवजात शिशु के वजन पर माता की उम्र उसकी लम्बाई उसकी, उसी वजन का प्रभाव पड़ता है।
2. माता की आजीविका का प्रभाव भी नवजात शिशु के वजन पर पड़ता है।
3. नवजात शिशु के शरीर के वजन का प्रभाव माता की आर्थिक स्थिति के कारण भी पड़ता है।
4. जन्म के समय पुरुष शिशु स्त्री शिशु के अपेक्षा अधिक वजन वाला होता है।
5. दो शिशुओं के बीच जन्मातराल का नवजात शिशुओं के जन्म के समय प्रभाव पड़ता है।
6. माता का सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियाँ नवजात शिशुओं के जन्म के समय के मध्यमान वजन धनात्मक प्रभाव डालता है।
7. प्रसव की प्रकृति स्पष्ट रूप से जन्म के समय के वजन को प्रभावित करती है।

विशेषज्ञों के अनुसार नवजात शिशुओं के जन्म के समय पर बहुकारणीय प्रभाव पड़ता है इन कारकों में से मातृकारकों का बड़ा महत्व होता है। अगर गर्भ के दिनों में भावी माताओं पर पूरी नजर रखी जाए, इनके समाजार्थिक परिस्थिति में सुधार लायी जाय तो कम वजन के दुर्बल शिशुओं के जन्म लेने की समस्या काफी हद तक दूर हो सकती है।

### अध्ययन की आवश्यकता:

सुप्रजननशास्त्र की अनुशंसा है कि शारीरिक एवं मानसिक रूप से अविकसित मानव का जन्म नहीं होने देना समाज का कर्तव्य है। अविकसीत मानवों के जन्म से सामर्थिक विकास प्रतिकूल रूप से प्रभावित होता है। अविकसीत मानव मनुष्य की गरिमा का आभास नहीं कर पाता है, वह हीन भावना से ग्रसित हो जाता है।

अतः चार्ल्स डार्विन के सरवाईवल ऑफ दी फीटेस्ट नामक जन्तु विज्ञानी सिद्धांत पर विश्वास करते हुए कम शारीरिक वजन वाले जीव को मारने के लिए नहीं छोड़ा जा सकता है। मानवशास्त्री कहते हैं कि मनुष्य संरक्षित की अभिव्यक्ति है संरक्षित में परिवर्तन करके उन बाधकों को दूर किया जा सकता है जो नवजात शिशुओं के वजन में बाधक बनते हैं जो उन्हें पूर्ण मनुष्य नहीं बनने देते।

हम सभी जानते हैं कि मनुष्य जन्तु नहीं मानव है इसलिए जन्तु विज्ञान के सिद्धांत के भरोसे उसे नहीं छोड़ा जा सकता है और यह युग मानवाधिकारों के लिए संघर्ष का (20 नवम्बर 1959) मानवाधिकार के विश्व घोषणा पत्र में कहा है ‘‘प्रत्येक बच्चों को सामाजिक सुरक्षा के लाभ मिलेंगे उसे स्वरूप रूप से विकसित होने और बड़े होने का अधिकार होगा।’’

### अध्ययन की विधि:

अध्ययन प्राथमिक ऑकड़ों पर आधारित होता है। वर्तमान अध्ययन में किसी नये सिद्धांत का निर्माण नहीं किया गया है और न ही किसी नये सिद्धांत का विकास किया गया है इस अध्ययन की तुलना पूर्व के अध्ययनों के निष्कर्ष के आधार पर किया गया है।

### अध्ययन का उद्देश्य:

- ✓ नवजात शिशु के माता के धम का पता लगाना।
- ✓ नवजात शिशु के माताओं के उम्र का पता लगाना।
- ✓ नवजात शिशुओं के माताओं के गर्भावधि का पता लगाना।

- ✓ नवजात रक्ती एवं पुरुष शिशुओं के जन्म के समय के वजन का पता लगाना।
- ✓ नवजात शिशु के माता की लम्बाई का पता लगाना।
- ✓ नवजात शिशु की माताओं के प्रसव के प्रकार की जानकारी लेना।
- ✓ नवजात शिशुओं की माताओं की भोजन संबंधी आदतों का पता लगाना।
- ✓ दो शिशुओं के बीच जन्मान्तराल का पता लगाना।
- ✓ नवजात शिशु के माता की सामाजिक स्थिति का पता लगाना।
- ✓ नवजात शिशु के माता का आजीविका का पता लगाना।
- ✓ नवजात शिशु के माता का आवास की प्रकृति का पता लगाना।
- ✓ नवजात शिशुओं के गर्भ के दिनों में उनकी माताओं के देखरेख का विवरण प्राप्त करना।
- ✓ नवजात शिशुओं के माता के वजन का पता लगाना।
- ✓ नवजात शिशुओं के गर्भकाल का पता लगाना।
- ✓ नवजात शिशुओं के गर्भकाल में उनकी माताओं की लग्नताओं का पता लगाना।
- ✓ नवजात शिशुओं के माताओं के गर्भाविधि के समय के कार्यों की प्रकृति ज्ञात करना।

### **गर्भनाल का प्रभाव:**

गर्भावस्था में शिशु अर्थात् भूषण को गर्भनाल से पोषण प्राप्त होता है कि इसलिए इस अवस्था में इस बात का खास ध्यान रखा जाता है कि माँ में गर्भनाल का ठीक-ठाक विकास हो ताकि शिशु के विकास में उचित मात्रा में पोषण मिलता रहे। अक्सर ऐसा देखने को मिलता है कि अनुवोशिक कारकों के कारण गर्भनाल का सही विकास नहीं हो पाता है जिसके कारण अपरिपक्व शिशु का जन्म होता है।

शतपथी ने बताया है कि गर्भनाल बढ़ने से बच्चे का वजन बढ़ता है। उन्होंने यह भी बताया है कि अगर गर्भनाल का वजन 500 ग्राम से कम हो तो ऐसे मामले में कम वजन वाले बच्चों के जन्म की संभावना बहुत बढ़ जाती है। अगर गर्भनाल का वजन 500 ग्राम से अधिक होता है तो सामान्य वजन के बच्चों के जन्म की संभावना बहुत अधिक बढ़ जाती है। ठीक ऐसा ही अनुसंधान देशाई (2002), श्रीवास्तव (2007) आदि ने अपने अध्ययनों में प्रस्तुत किया है।

स्कॉट (1982) ने अपने एक अध्ययन में यह पाया है कि अविकसित गर्भनाल के कारण बच्चों को पोषण मिलने में बाधा पड़ती है अतः गर्भ में पूरी अवधि तक रहने के बाद भी अविकसीत बच्चे का जन्म होता है।

## समय पूर्व जन्म की समस्या:

समय से पहले जन्में बच्चों की मृत्युदर ऊँची होती है कहने का तात्पर्य है कि इस तरह से जन्में शिशु कम समय तक ही जीवित रहते हैं।

भारत के शिशु रोग विशेषज्ञों जनरखास्थ्य कार्यकर्त्ताओं और शोद्यकर्त्ताओं द्वारा अनुभूत है कि भारत जैसे अविकसीत देश में विकसीत देशों की तुलना में शिशुओं का वजन कम होता है। बड़े पैमाने पर 2500 ग्राम से कम वजन के नवजात शिशुओं का जन्म भारत में होता है। इस देश में 2500 ग्राम एवं इसके आसपास के शिशुओं के जन्म को एक आम बात जानी जाती है। कई बार तो माताओं को यह पता ही नहीं चलता है कि वह कब गर्भवती हो गयी इस अज्ञानता का नतीजा यह होता है कि उनके अनुसार नौ महीने बीत जाने के बाद भी 2500 ग्राम से कम वजन के अपरिपक्व बच्चों का जन्म होता है।

भारत एक विकासशील देश है अतः कई शोद्यकर्त्ताओं का यह मानना है कि भारत में बच्चों की परिपक्तवा और अपरिपक्वता की सीमा रेखा वर्ही नहीं होनी चाहिए जो अमेरिका जैसे विकसित देश में है।

## संदर्भ सूची :

1. Adam,G.S.,(1963)Aetiological factors in Premature labour Jobst enynaec comm. 66. 723-36.
2. Baird D, (1962), environmental obstetrical factors in prematurity with special reference to experience in A freedom bull W.H.O.
3. Devi, B and Sarkar D. (1972), A study of the birth weight Indian J. of Padit.
4. Harish Chandra (2001) Birth Weight of infants of different economic groups in Hyderabad Proc. Nutr. Sec. India 10:99.
5. Kalra, K.Kishore n. and Dayal R.S. (1967) Anthropometric measurements in the newborn A study of 1000 consecutive live births Indian J. Pandit 34:73.
6. Jayant K (2004) Birth weight and some other factors in relation to infant survival a study on an Indian sample Ann. Hum Genet